OM SHANTI MEDIA - JULY- II - 2022 DELHI FINAL FILE_Page 1 and 2 6/28/2022 9:37 AM Page 2

रक्षाबंधन का सही मर्म

रक्षाबंधन का शाब्दिक अर्थ है रक्षा करने वाला बंधन, मतलब धागा। इस पर्व पर बहनें भाई की कलाई पर रक्षासूत्र बांधती हैं और बदले में भाई जीवन भर उनकी रक्षा करने का वचन देते हैं। रक्षाबंधन या राखी को सावन महीने में पड़ने की वजह से श्रावणी व सलोनी कहा जाता है। ये सावन मास की पूर्णिमा में पड़ने वाला हिन्दु तथा जैन धर्म का प्रमुख त्योहार है। रक्षाबंधन के इतिहास पर नज़र डालें तो एक बार की बात है कि देवता और असुरों में युद्ध आरंभ हुआ, युद्ध में हार के परिणामस्वरूप देवताओं ने अपना राजपाट सब गंवा दिया। अपना राजपाट पुनः प्राप्त करने की इच्छा से देवराज इन्द्र देवगुरु बृहस्पति से मदद की गुहार करने लगे। तत्पश्चात् देवगुरु बृहस्पति ने श्रावण मास की पूर्णिमा को प्रातः काल में निम्न मंत्र से रक्षा विधान सम्पन्न किया। 'येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबलः तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे मा चल मा चलः।' इस पूजा से प्राप्त सूत्र को इंद्राणि ने इंद्र के हाथ पर बांध दिया जिससे युद्ध में इंद्र को विजय प्राप्त हुई और उन्हें अपना हारा हुआ राजपाट दुबारा मिल गया। तब से ये रक्षाबंधन का त्योहार मनाया जाने लगा।

ब्र.कु. गंगाधर

पर आज के आधुनिक युग में रक्षाबंधन की विधि का स्वरूप ही बदल गया है। पुराने समय में घर की छोटी बेटी द्वारा पिता को राखी बांधी जाती थी। साथ ही गुरुओं द्वारा अपने यजमान को भी रक्षासूत्र बांधा जाता था। पर अब बहनें ही भाई की कलाई पर यह बांधती हैं। इसके साथ ही समय की व्यस्तता के कारण राखी के पर्व की पूजा पद्धति में भी बदलाव आया है। अब लोग पहले की अपेक्षा इस पर्व में कम सक्रिय नज़र आते हैं। राखी के अवसर पर अब भाई के दूर रहने पर बहनों द्वारा कुरियर के माध्यम से राखी भेज दी जाती है। इसके अतिरिक्त मोबाइल पर ही राखी की शुभकामनाएं भेज दी जाती हैं।

रक्षा का मतलब है, बहन भाई से अपनी सुरक्षा चाहती है। परंतु आज के परिप्रेक्ष्य में हमने देखा कि विपरीत परिस्थितियों में कोई किसी को भी रक्षा प्रदान नहीं कर सकता। ये हम सबने कोरोना काल में देखा। चाहे कितना भी धनवान व्यक्ति क्यों न हो, पैसों का अम्बार होते हुए भी वो असहाय, अपने भी उसकी रक्षा नहीं कर पाये।

जैसे इंद्र ने पुनः अपना राजपाट प्राप्त करने के लिए बृहस्पति ब्रह्मा से गुहार की। यानी कि सामने आने वाली हर कठिनाई व मुश्किलातों में ब्रह्मा से मदद मांगी गई। क्योंकि ब्रह्मा ही सारी सृष्टि का ज्ञाता है। कैसे उससे निजात पाया जाए ये उसमें ही सम्पूर्ण ज्ञान है। इसके आध्यात्मिक रहस्य को जानें तो आज हम स्थूलता से किसी की रक्षा करने में तो असक्षम हैं, किन्तु उसके मानसिक धरातल पर उसे वो ज्ञान व समझ देकर सुशिक्षित कर दिया जाए तो वो अपने आप ही स्वरक्षा कर सकता है। जैसे खेल में प्रशिक्षण पाने के बाद किसी भी तरह की ऑपोज़ीशन के दांव-पेच में खिलाड़ी ज्ञान की क्षमता को यूज़ कर विजयी बन जाता है। तो आज के समय में हम हरेक व्यक्तिगत सुरक्षा तो नहीं दे सकेंगे किन्तु उसे सही ज्ञान व उसकी उपयोगिता की समझ प्रदान कर दें तो वे कैसी भी परिस्थिति में अपने को सुरक्षित रख सकता है। इसी संदर्भ में ब्रह्मा के द्वारा रचे हुए और उसी ज्ञान से श्रृंगारित हुए उनके बच्चे जो कि ब्राह्मण हैं, उन्हीं के द्वारा पवित्रता की सूचक रक्षाबंधन बांधा जाए, यही वास्तव में सच्चा रक्षाबंधन है। देवताओं ने अपनी पवित्रता की ओज को खो दिया, तब वे असुरक्षित होने लगे और समयांतर वे मनुष्य के रूप में दूसरों से रक्षा की कामना करने लगे। अब हम आपको ये बताना चाहते हैं कि इस समय स्वयं परमपिता परमात्मा जो कि पवित्रता के सागर हैं, वे हम सभी को पवित्र भवः, योगी भवः का वरदान देकर हमें सुरक्षा प्रदान करते हैं। और हमें याद दिलाते हैं कि हे भारतवासी, आप ही इतने महान थे, सोलह कला सम्पूर्ण थे, सम्पूर्ण निर्विकारी थे, मर्यादापुरुषोत्तम थे, तब आप सुरक्षित थे। अब पुनः अपने इस स्वमान में स्थित होकर अपनी शक्तियों को पहचानो, स्वयं में व्याप्त बुराइयों को नष्ट करो। और पवित्रता को अपने जीवन में अपनाकर अपने आप में सुख-शांति-समृद्धि व शक्ति से स्वरक्षित हो जाओ। न सिर्फ अपने तक, बल्कि दूसरों को भी इसी राह पर चलकर स्वयं को सुरक्षित रखने की विधि बताओ। रक्षा बंधन, बधंन नहीं, लेकिन परमपिता परमात्मा के साथ पवित्र बंधन, पवित्र सम्बंध की यादगार है। पवित्रता की धारणा ही हरेक को सुरक्षा प्रदान करेगी।

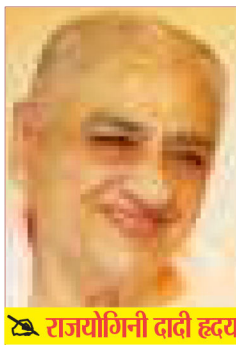

दिलाराम को दिल में बिठा लो तो सदा खुश रहेंगे

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

सबके दिल में मीठा बाबा है। ऐसे है ना! क्योंकि मीठा बाबा नहीं दिल में होगा तो और क्या होगा? हमारे दिल का दिलाराम तो मीठा बाबा ही है ना! हरेक यही कहता कि मेरा बाबा। सभी ने बाबा को मेरा बनाया है ना! जितना बाबा में मेरापन लायेंगे तो सब मैलापन निकल जायेगा। कितने लोग याद आते हैं, किसको करो याद, किसको भूल जाओ लेकिन मेरा बाबा तो मेरे दिल में है ही, याद भी है ही। तो बस जब हरेक के दिल में बाबा आ गया तो समझो विजयी बन गये। जिसको दुनिया याद करती है, दुनिया याद करती है लेकिन मेरे तो दिल में आ गया। बस, मेरा बाबा के सिवाए और है कौन! अभी तो पक्का हो गया है ना। जब दिल में यह आता है कि मेरा बाबा तो शक्ल ही बदल जाती है। क्योंकि भगवान आ गया मेरे दिल में! कम बात थोड़े ही है।

खुशी कभी नहीं गंवानी क्योंकि ज्ञान की प्राप्ति है ही खुशी। कोई भी बात हो जाये, अब दुनिया में रहते हैं तो दुनिया की बातें तो आयेंगी ही ना, लेकिन हमारी दिल बाबा की है। तो खुशी कभी नहीं छोड़ना। हमेशा आपकी शक्ल ऐसे खुश दिखाई दे जो देखने से ही समझें यह कोई न्यारे दिखाई देते हैं। सबके चेहरे सदा खुश है ना कि कोई प्रॉब्लम है? आती है थोड़ी-थोड़ी प्रॉब्लम लेकिन प्रॉब्लम जो है ना वो बाबा को दे दो, बस। देना तो सहज है, लेना थोड़ा मुश्किल है लेकिन देना तो सहज होता है ना! जब मेरा बाबा हो गया, तो सब मेरे में समा गये। सदा खुश या कभी कभी? सदा। क्योंकि हमारे सिवाए और खुशी जायेगी कहाँ? उसका स्थान हम ही तो हैं जिन्होंने खुशी को अपना बनाया। तो हम खुश नहीं होंगे तो कौन होगा? प्रॉब्लम सारी बाबा को दे दी ना, तो सब खुश! अगर खुशी पूछना हो तो कहेंगे हमसे पूछो। तो खुश रहना है और खुशी बाँटनी है। अभी भी कोई-कोई खुश नहीं रहते हैं, दुनिया में कितने पड़े हैं। हाँ, ऐसे ही नहीं करते हैं पर कोशिश तो करते हैं ना! तो सभी खुश रहना और खुशी बाँटना।

अन्दर से अभिमान और निराशा को निकाल सच्चाई, प्रेम और विश्वास को भरो

राजयोगिनी दादी जानकी जी

जो जिस लक्ष्य में निश्चय रखते हैं, उस अनुसार वह लक्षण आते ही हैं। जिसका साथी है भगवान उसको क्या करेगा आंधी और तूफान, इसमें निश्चय की बात नहीं है। निश्चयबुद्धि है उसका प्रैक्टिकल अनुभव किया है। उसी अनुभव से हम कहते हैं तो उसमें विश्वास बैठता है। सच्चाई, प्रेम, विश्वास अन्दर से न सिर्फ बीज पड़ा है बल्कि उसका फल खा रहे हैं। यह सच्चा नहीं है पर तुम सच्ची बनो। अन्दर से सच्चाई, प्रेम और विश्वास से सारा कार्य चल रहा है, इसी से कई कार्य सफल हुए हैं। मैंने ही किया तो यह अभिमान या मैं नहीं कर सकती हूँ तो निराशा, यह दो अवगुण सच्चाई, प्रेम और विश्वास का अनुभव करने नहीं देते हैं। जो मेरे से औरों को भी फल मिले, जो बाबा कहता है इसके लिए पुरूषार्थ करना पड़े। दादियों में कोई ज़्यादा पढ़ा लिखा नहीं है लेकिन सच्चाई, प्रेम और विश्वास से आज यह अव्यक्त पालना हो रही है। तो हम लोगों में जो निश्चय का बल भरा है, उनसे अनेक प्रकार की बेहद सेवायें हुई हैं, अन्त तक होती रहेंगी।

गति-सद्गति दाता बाप है। उसने माताओं, शक्तियों को आगे रखा है। निश्चय का यह प्रैक्टिकल सबूत है कि उनका रिकॉर्ड अच्छा होगा और वही बड़ों का रिगार्ड रखेंगे। पूर्वजों को रिगार्ड देने से उनके सूक्ष्म वायब्रेशन बड़ी शक्ति दे रहे हैं, सब शक्तियां हाज़िर हैं। कमज़ोरी की बातें न सुनना, न सुनाना। कोई भी सरकमस्टांश(परिस्थितियां) आदि की लम्बी बात नहीं करना क्योंकि बाबा कौन है? कैसा है? क्या खुद करता है? कैसे कराता है? यह कभी बैठके सोचो, ज्ञान की गहराई में जाओ तो यह सारी बातें आपेही खत्म हो जायेंगी। यह है प्रभु लीला। तो ऐसे परमात्मा के अन्त में जाना, बेअन्त खुशी को पाना, जिसका कोई पारावार नहीं। तो सुख नहीं कहेंगे, बेअंत खुशी, वह खुशी बांटेगा। कोई भी उसके सामने आयेगा तो वह खुशी देगा। इतना खुशी जो बेफिकर बादशाह, बिगर कौड़ी बादशाह प्रैक्टिकली बाबा ने प्रमाण बनाया है। निश्चय से विजय पाई है, सच्चाई से यहाँ पहुंचे हैं, तो सम्भलके बोलो, सम्भलके सोचो। रीस नहीं करो, रेस भले करो।

हलचल को समाप्त करने का साधन है - बाबा से बातें करना

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

संगठन को एकमत बनाने का आधार है फेथ। जब आपस में एक-दो में फेथ रखते हैं तो सहयोग अवश्य मिलता है। आपका कार्य सो मेरा कार्य। फेथ के पीछे मैं और तू, तेरा और मेरा सब समाप्त हो जाता है। फेथ रहे तो कभी भी अभिमान नहीं आयेगा। आपकी महिमा सो मेरी महिमा। आपकी बड़ाई सो मेरी बड़ाई इसलिए हम अपने समान साथी को इतना रिगार्ड दें जो वह आपेही हमें दें, कहना न पड़े यह भी मर्यादा है।

हरेक की विशेषताओं को देखना है। हरेक में बाबा ने कोई न कोई खूबी ज़रूर भर दी है। बड़ी बड़ाई बाबा की है, मेरी नहीं। सदैव अपने सामने लक्ष्य हो बाबा। बाबा ने हमें निमित्त बनाया है।

लॉ उठाना, टोन्ट कसना, टोक देना, यह मेरा काम नहीं है। मैं कभी भी अपने हाथ में लॉ नहीं उठा सकती। हमें बाबा जो सेवा देता है उसे प्राण देकर करनी है, यह हमारा लक्ष्य हो। फेथ को तोड़ने वाला कांटा है रीस। तो मुझे आत्माओं से रीस नहीं करनी है। रीस करो तो बाबा से क्योंकि हमें बाप समान बनना है।

ईर्ष्या करना मंथरा का काम है। यह वायदा करो कि मैं मंथरा नहीं बनूँगी। ईर्ष्या अथवा विरोध भावना दूसरे की निंदा करायेगा। ईर्ष्या करना यह रावण की मत है। बाप की नहीं।

हरेक की बात का भाव समझना है, स्वभाव को नहीं देखना है। अगर किसी की गलती दिखाई भी देती है तो बाबा ने हमें समाने की शक्ति भी दी है। कभी एक की बात दूसरे से वर्णन नहीं करना है। भल सुनो, लेकिन उसे वहीं पर सुनी-अनसुनी कर दो। भूल को अन्दर रखने से वायब्रेशन खराब होता है। दूसरे की भूल को अपनी भूल समझो।

अपनी स्थिति को सदैव सुखमय रखो। कभी भी तंग दिल, उदास दिल नहीं बनना है। कोई झूठा अपमान करेगा कोई सच्चा। दुनिया की टक्करें अनेक आयेंगी लेकिन हमें उदास नहीं होना है। पत्थर भी पानी की लकीरें खा-खाकर पूज्यनीय बनता है। तो हमें भी सबकुछ सहन करके चलना है। हलचल को समाप्त करने का साधन है - बाबा से बातें करना। बाबा के पास जाओ तो बाबा आपेही कदमों में बल भर देगा।

मुझे किसी भी आत्मा पर डिपेन्ड नहीं करना है। आत्मा पर डिपेन्ड करने से बैलेन्स बिगड़ जाता है। बाबा पर डिपेन्ड करो। एक-दो का आधार लेकर चलना बिल्कुल गलत है। मुझे तो साथी चाहिए, सहयोग चाहिए... नहीं। मेरा साथी एक बाबा है। मैं बाबा से ही सहयोग लूँ।

दूसरों को संतुष्ट करना - यह बहुत बड़ा पुण्य है, इससे हमारी आत्मा को बल मिलता है।

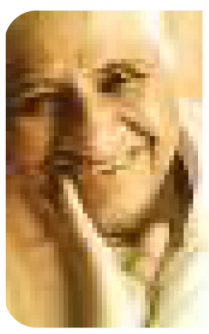

दूसरों को संतुष्ट करना - यह बहुत बड़ा पुण्य है, इससे हमारी आत्मा को बल मिलता है। किसी के गुणों पर मोहित नहीं होना है। सदा बाबा को आगे रखो। बाबा को आधार बनाओ तो किसी में भी फँसेंगे नहीं।

हमारा संसार बाबा है इसलिए कभी भी अन्दर में यह भावना नहीं आनी चाहिए, यह मेरा स्टूडेंट, यह तेरा। किसी भी प्रकार का स्वार्थ न हो। स्वार्थ अधीन बना देता है। किसी देहधारी में स्नेह जाता है माना स्वार्थ है। इस स्वार्थ से ईश्वरीय मर्यादाओं का उल्लंघन होता है इसलिए साकार बाबा ने हमेशा हमें स्नेह दिया लेकिन स्वार्थ का स्नेह नहीं दिया। तो जैसे हमारा बाबा निःस्वार्थी था वैसे निःस्वार्थी बनो। तो सबसे न्यारे और प्यारे बन जायेंगे।

ऐसा कभी नहीं सोचना कि मेरा कोई सहारा नहीं है। लेकिन विघ्नों से घबराओ नहीं। विघ्न भल कितना भी बड़ा हो लेकिन अपने संकल्प से कभी भी बड़ा नहीं करो। जड़ को समझकर उसके बीज को काटो।

माया से डोन्टकेयर करना ठीक है, आपस में नहीं। जो आपस में डोन्ट केयर करते उनकी जबान पर लगाम नहीं रहता। जो आता वह बोल देते, यह स्वभाव भी डिससर्विस करता है।